MGPE-011

HUMAN SECURITY

IMPORTANT QUESTIONS WITH ANSWERS

PART-3

TOPIC-1

Climate change and global warming are anthropogenic. Comment.

Climate change and global warming are largely considered to be anthropogenic, meaning they are primarily caused by human activities. These activities include the burning of fossil fuels, deforestation, and industrial processes that release greenhouse gases into the atmosphere. As a result, these gases trap heat and cause the Earth's temperature to rise.

जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग मुख्य रूप से मानवजनित माने जाते हैं, जिसका अर्थ है कि वे मुख्य रूप से मानव गतिविधियों के कारण होते हैं। इन गतिविधियों में जीवाश्म ईंधन का जलाना, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रक्रियाएं शामिल हैं जो वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती हैं। इसके परिणामस्वरूप, ये गैसें गर्मी को रोकती हैं और पृथ्वी के तापमान को बढ़ा देती हैं।

The evidence for anthropogenic climate change is substantial. Scientific research shows a clear link between human activities and the increase in global temperatures. The Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) reports that it is extremely likely that more than half of the observed increase in global average surface temperature from 1951 to 2010 was caused by human activities.

मानवजनित जलवायु परिवर्तन के सबूत पर्याप्त हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान मानव गतिविधियों और वैश्विक तापमान में वृद्धि के बीच स्पष्ट संबंध दिखाते हैं। अंतर सरकारी जलवायु परिवर्तन पैनल (IPCC) की रिपोर्ट है कि 1951 से 2010 तक

Scholarly Minds

वैश्विक औसत सतह तापमान में देखी गई वृद्धि का आधे से अधिक हिस्सा मानव गतिविधियों के कारण था।

Mitigating the effects of climate change requires international cooperation and concerted efforts to reduce greenhouse gas emissions. This includes transitioning to renewable energy sources, improving energy efficiency, and protecting forests. Policies and regulations at national and global levels are crucial to achieving these goals.

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए एकजुट प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन, ऊर्जा दक्षता में सुधार और वनों की रक्षा शामिल है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर नीतियां और विनियम महत्वपूर्ण हैं।

TOPIC-2

Discuss the interrelationship between development and global warming.

The interrelationship between development and global warming is complex and multifaceted. Development, particularly in the context of industrialization and urbanization, often leads to increased greenhouse gas emissions, which contribute to global warming. However, development can also provide the means and resources to address and mitigate the effects of global warming.

विकास और ग्लोबल वार्मिंग के बीच का संबंध जटिल और बहुआयामी है। विकास, विशेष रूप से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के संदर्भ में, अक्सर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि का कारण बनता है, जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करते हैं। हालांकि, विकास ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को संबोधित करने और कम करने के साधन और संसाधन भी प्रदान कर सकता है।

As countries develop, their energy consumption typically increases. This is particularly true for emerging economies that rely heavily on

Scholarly Minds

fossil fuels for energy. The increased use of coal, oil, and natural gas leads to higher carbon dioxide emissions, which are the primary drivers of global warming. On the other hand, development also facilitates the adoption of cleaner technologies and renewable energy sources.

जैसे-जैसे देश विकसित होते हैं, उनकी ऊर्जा खपत आमतौर पर बढ़ती है। यह विशेष रूप से उन उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के लिए सही है जो ऊर्जा के लिए बड़े पैमाने पर जीवाश्म ईंधन पर निर्भर हैं। कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस के बढ़ते उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में वृद्धि होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारक हैं। दूसरी ओर, विकास स्वच्छ प्रौद्योगिकियों और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने में भी सुविधा प्रदान करता है।

Development also impacts land use and deforestation, which are significant factors in global warming. Expanding agriculture, infrastructure, and urban areas often leads to deforestation, reducing the planet's capacity to absorb carbon dioxide. This exacerbates global warming. Conversely, sustainable development practices can help preserve forests and promote reforestation, mitigating the impact of climate change.

विकास भूमि उपयोग और वनों की कटाई को भी प्रभावित करता है, जो ग्लोबल वार्मिंग में महत्वपूर्ण कारक हैं। कृषि, बुनियादी ढांचे और शहरी क्षेत्रों के विस्तार से अक्सर वनों की कटाई होती है, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की ग्रह की क्षमता कम हो जाती है। इससे ग्लोबल वार्मिंग और बढ़ जाती है। इसके विपरीत, सतत विकास प्रथाएँ वनों को संरक्षित करने और पुनर्वनीकरण को बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकती हैं।

Addressing the interrelationship between development and global warming requires a balanced approach. Policies must promote economic growth and development while ensuring environmental sustainability. This includes investing in renewable energy, enhancing energy efficiency, and implementing sustainable land-use practices.

Scholarly Minds

International cooperation and support for developing countries are crucial to achieving these goals.

विकास और ग्लोबल वार्मिंग के बीच के संबंध को संबोधित करने के लिए संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। नीतियों को आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा देना चाहिए जबकि पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करनी चाहिए। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना और सतत भूमि-उपयोग प्रथाओं को लागू करना शामिल है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विकासशील देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समर्थन महत्वपूर्ण है।

TOPIC-3

Discuss the threat of terrorism in contemporary world.

The threat of terrorism in the contemporary world remains a significant concern for many nations. Terrorism, characterized by the use of violence and intimidation, often targets civilians to achieve political, ideological, or religious goals. The evolving nature of terrorism, with its increasing complexity and global reach, poses a persistent and multifaceted challenge.

आधुनिक दुनिया में आतंकवाद का खतरा कई देशों के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है। आतंकवाद, जो हिंसा और धमकी का उपयोग करके नागरिकों को लक्षित करता है, अक्सर राजनीतिक, वैचारिक या धार्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। आतंकवाद की बदलती प्रकृति, इसकी बढ़ती जटिलता और वैश्विक पहुंच के साथ, एक सतत और बहुआयामी चुनौती पेश करती है।

One of the major factors contributing to the ongoing threat of terrorism is the rise of extremist ideologies. Groups such as ISIS and Al-Qaeda have leveraged social media and the internet to spread their propaganda, recruit members, and coordinate attacks. These platforms have enabled them to reach a global audience, radicalize individuals, and inspire lone-wolf attacks that are difficult to predict and prevent.

Scholarly Minds

आतंकवाद के चल रहे खतरे में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों में से एक उग्रवादी विचारधाराओं का उदय है। ISIS और अल-कायदा जैसे समूहों ने अपने प्रचार, सदस्य भर्ती और हमलों के समन्वय के लिए सोशल मीडिया और इंटरनेट का उपयोग किया है। इन प्लेटफार्मों ने उन्हें वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने, व्यक्तियों को कट्टरपंथी बनाने और अकेले हमले करने के लिए प्रेरित किया है जिनकी भविष्यवाणी करना और रोकना कठिन है।

Terrorist organizations have also exploited geopolitical instability and conflict zones to establish bases of operations. Regions like the Middle East, Africa, and South Asia have seen the proliferation of terrorist groups due to weak governance, ongoing conflicts, and socio-economic disparities. These groups often exploit local grievances and power vacuums to gain support and expand their influence.

आतंकवादी संगठनों ने संचालन के अड्डे स्थापित करने के लिए भू-राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष क्षेत्रों का भी फायदा उठाया है। मध्य पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में कमजोर शासन, चल रहे संघर्षों और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण आतंकवादी समूहों का प्रसार हुआ है। ये समूह अक्सर स्थानीय शिकायतों और शक्ति शून्यों का फायदा उठाकर समर्थन हासिल करते हैं और अपना प्रभाव बढ़ाते हैं।

In addition to traditional terrorism, cyberterrorism has emerged as a new frontier. Terrorist groups have increasingly utilized cyber attacks to disrupt critical infrastructure, steal sensitive information, and spread fear. The anonymity and accessibility of cyberspace make it an attractive domain for terrorists to operate, posing new challenges for security agencies worldwide.

पारंपरिक आतंकवाद के अलावा, साइबर आतंकवाद एक नया क्षेत्र बनकर उभरा है। आतंकवादी समूहों ने महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को बाधित करने, संवेदनशील जानकारी चुराने और डर फैलाने के लिए साइबर हमलों का तेजी से उपयोग किया है। साइबरस्पेस की गुमनामी और सुलभता इसे आतंकवादियों के लिए संचालन का एक आकर्षक क्षेत्र बनाती है, जिससे दुनिया भर की सुरक्षा एजेंसियों के लिए नई चुनौतियाँ पैदा होती हैं।

Scholarly Minds

Addressing the threat of terrorism requires a multifaceted approach. This includes strengthening international cooperation, enhancing intelligence sharing, and improving counter-terrorism strategies. Additionally, addressing the root causes of terrorism, such as poverty, political instability, and social inequality, is crucial. Efforts to counter violent extremism through education, community engagement, and de-radicalization programs are also essential.

आतंकवाद के खतरे का सामना करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना, खुफिया जानकारी साझा करना और आतंकवाद विरोधी रणनीतियों में सुधार करना शामिल है। इसके अलावा, गरीबी, राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक असमानता जैसे आतंकवाद के मूल कारणों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। शिक्षा, सामुदायिक जुड़ाव और पुनर्वास कार्यक्रमों के माध्यम से हिंसक उग्रवाद का मुकाबला करने के प्रयास भी आवश्यक हैं।

Scholarly Minds